धम्मार :- धमार गीत अथवा गायन शैली का प्रचार प्रसार मध्य युग से ही आरम्भ हुआ यह चौदह मात्रों के ताल में निबद्ध गीत है इस गीत शैली में भी ध्रुपद के समान पखावज नामक ताल वाद्य से संगति की जाती है। धम्मार मुख्यतः होरी से सम्बंधित गीत प्रबन्ध है इसमें राधा-कृष्ण के होली से सम्बंधित छेड़छाड़ का वर्णन मिलता है धमार विशेष कर काफी, सिन्दूरा, खमाज भैरवी आदि रागों में निबद्ध प्राप्त होते है ध्रुपद के समान ही इसके गायन से पूर्व तीन अथवा चार चरण तक स्वर आलाप करने की परम्परा है धमार अधिकर ध्रुपद गायक ही गाते है धमार गीत की भाषा ब्रज भाषा है। प्रचलित अथवा उपलब्ध धमार मध्यकाल विशेषकर मुगल काल के ही रचे हुए प्राप्त होते है। ख्याल की तरह धमार की रचना वर्तमान समय मे नही होती है।

Scanned with CamScanner

होरी :- धमार ताल में निबद्ध होली के वर्णन जिसमें अधिकतर राधा-कृष्ण के होली खेलने के प्रसंग हो उसे ही होरी कहा जाता है, इस गीत में पदसाधज से संगति की जाती है तथा यह प्रबन्ध काफी, सिन्दुरा, देशी, आदि रागो में निबद्ध होती है।

चतुरंग :- यह गीत प्रकार ख्याल शैली के अन्तर्गत आता है, इस गीत में चार प्रकार के गायिकी का समावेश होने के कारण ही इसको "चतुरंग" कहा गया है, जिसमें चार प्रकार की गायन का रंग मिला हो चतुरंग में ख्याल को बोल, तराना, सरगम तथा नृत्य के बोल होते है, फिल्म कोहिनूर का मोहम्मद रफी के गाया गया ~~फिल्म~~ गीत "मधुबन में राधिका नाचे रे" चतुरंग ही है, जो राग हमीर में निबद्ध है।

भजन :- अपने आराध्य को गीत के माध्यम से गाकर आराधना करने को ही भजन कहा गया है, इस प्रकार के पद में अपने इष्ट के गुणों की चर्चा, उनके रूप, सौन्दर्य तथा दयालु स्वभाव का वर्णन किया जाता है, बराबर इन्हीं बातो को दुहराने को ही भजन कहा जाता है।

Scanned with CamScanner